भाषा विज्ञान के मुख्य अंग

भाषा मानव मात्र के लिए अनिवार्य तत्त्व है यही उसकी व्यवहार साधिका है। भाषा विज्ञान का क्षेत्र इतना ही व्यापक है, जितना मानवता के इतिहास का। भाषा विज्ञान के अध्ययन के मुख्य चार अंग हैं- ध्वनि, रूप, अर्थ और वाक्य।

ध्वनि विज्ञान - ध्वनि भाषा की रचना का मूल तत्त्व है। वस्तुतः ध्वनि विज्ञान भाषा विज्ञान का ही एक उपविज्ञान है। इसके अंतर्गत उनका विवेचन किया जाता है, जिनकी सहायता से मनुष्य ध्वनियों का उच्चारण करने में सफल होता है। ध्वनि से संबंध रखने वाले विभिन्न अवयवों जैसे मुख, नासिका, दंत, ओष्ठ, तालु आदि विभिन्न ध्वनि यंत्रों का विवेचन किया जाता है।

रूप विज्ञान - इसे शब्द विज्ञान भी कहा जाता है। शब्द के रूप की संगठना के लिए रूप विज्ञान का अध्ययन आवश्यक है। इसमें शब्द के रूप, व्याकरण की दृष्टि से उन रूपों के विकास, कारण, उपसर्ग, प्रत्यय आदि पर विचार किया जाता है।

अर्थ विज्ञान - भाषा विज्ञान का तीसरा महत्वपूर्ण अंग अर्थ विज्ञान है। इसके अंतर्गत शब्द और अर्थ के परस्पर संबंध, अर्थ परिवर्तन के कारण और अर्थ परिवर्तन की दिशाओं का अध्ययन किया जाता है।

वाक्य विज्ञान - भाषा का प्रमुख कार्य विचार विनिमय है। विचारों का आदान-प्रदान वाक्यों द्वारा होता है। भाषा विज्ञान के अंतर्गत वाक्य का अध्ययन, पदक्रम, अन्वय, परिवर्तन आदि के कारणों का अध्ययन किया जाता है।

इसके अतिरिक्त कुछ गौण विषय भी हैं जो भाषा विज्ञान के अंग है- भाषा की उत्पत्ति, भाषाओं का वर्गीकरण, भाषिक भूगोल, भाषाकाल क्रमविज्ञान, प्रागैतिहासिक खोज, लिपि विज्ञान, समाज भाषा विज्ञान, मनोभाषा विज्ञान, भूभाषा विज्ञान, सर्वेक्षण पद्धति और शब्द समूह। इस प्रकार भाषा विज्ञान ध्वनि, रूप, अर्थ और वाक्य इन मुख्य

तत्त्वों पर तो विचार करता ही है इसके साथ-साथ इन गौण विषयों पर भी विचार करना भाषा विज्ञान का अंग है।

ध्वनि विज्ञान

साधारण शब्दों में कानों में सुनाई देने वाली किसी भी आवाज को ध्वनि की संज्ञा दी जाती है। भाषा में ध्वनि वह ध्वनि है जिसे मनुष्य अपने मुंह से नियत उच्चारण स्थान से किसी उद्देश्य को स्पष्ट करने के लिए बोलता है। ध्वनि विज्ञान में ध्वनियों के उच्चारण रचना, और अर्थ पर विचार किया जाता है। अतः ध्वनि विज्ञान के दो प्रमुख भेद किए जा सकते हैं-

1.ध्वनि शिक्षा - ध्वनि शिक्षा के प्रधान अंग उच्चारण स्थान और प्रयत्न है। ये ध्वनि यंत्र भी कहलाते हैं। कंठ, तालु, मूर्धा, दंत, ओष्ठ, नासिका, कंठतालु, कण्ठोष्ठ, दन्तोष्ठ, जिह्वा आदि उच्चारण स्थान है। जहाँ से विभिन्न स्वर एवं व्यंजनों का उच्चारण किया जाता है।

उच्चारण स्थान के अतिरिक्त दूसरा विषय प्रयत्न है। ध्वनियों के उच्चारण के लिए हवा को रोककर कई प्रकार से मुख को विकृत करना पड़ता है। इसी क्रिया को प्रयत्न कहते हैं, इसके दो भेद हैं- आभ्यांतर प्रयत्न और बाह्य प्रयत्न। उच्चारण के लिए मुख के अंदर किए जाने वाले यत्न को आभ्यान्तर यत्न और मुख के बाहर किए जाने वाले यत्न बाह्य प्रयत्न कहलाते हैं। स्वर और व्यंजनों का वर्गीकरण इसी आधार पर किया जाता है। स्वरों के अभाव में व्यंजनों का उच्चारण संभव नहीं है। पाणिनि मुनि ने संपूर्ण ध्वनि समूह को 14 सूत्रों में विभक्त किया है जिन्हें माहेश्वर सूत्र कहते हैं।

ध्वनि गुण, ध्वनियों के उच्चारण में विविधता पाई जाती है। इसे ध्वनि गुण कहा जाता है। इन ध्वनिनों में ह्रस्व, दीर्घ और प्लुत 3 मात्राएं होती हैं। ये मात्राएं ध्वनियों को छोटा, बड़ा और बहुत बड़ा करने में समर्थ होती है। इनके उच्चारण में जितना समय लगता है उसे मात्रा कहते हैं। संस्कृत में भी यही तीन मात्रा पाई जाती हैं। इसके अतिरिक्त उच्चारण

के समय किसी ध्वनि पर कम बल दिया जाता है और किसी पर अधिक इसे बलाघात कहते हैं।

2. ध्वनि विकार - ध्वनि विज्ञान के अध्ययन का दूसरा विषय है, ध्वनि में होने वाले परिवर्तनों पर विचार करना । इसे ध्वनि विकार भी कहा जाता है । ध्वनि में निरंतर परिवर्तन होते रहते हैं। एक व्यक्ति ध्वनि का उच्चारण करता है और दूसरा व्यक्ति उसे सुनता है। वक्ता की ध्वनियों का प्रभाव श्रोता पर पड़ता है। यह प्रभाव दो प्रकार का है आभ्यान्तर औरबाह्य । आभ्यांतर कारणों का संबंध वक्ता के उच्चारण और श्रोता के श्रवण से होता है । बाह्य कारणों में व्यवहार तथा मनुष्य जीवन की राजनैतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक चेतना तथा भौगोलिक कारण होते हैं । इनके कारण वर्ण-विपर्यय, वर्णों का लोप, वर्णों का आगामादि होने से ध्वनि में परिवर्तन हो जाता है। तात्पर्य यह है कि ध्वनियों में निरंतर परिवर्तन होता रहता है। इन परिवर्तनों के विभिन्न कारणों पर यहां विचार किया जाएगा।

ध्वनि परिवर्तन और उसके कारण-

ध्वनि अवयवों की विभिन्नता- प्रत्येक व्यक्ति के ध्वनि अवयव भिन्न भिन्न होते हैं । इसी कारण ध्वनि को सुनने और बोलने की क्षमता भी भिन्न-भिन्न हो जाती है । अपने विशिष्ट श्रवण के कारण दूसरा व्यक्ति उसे उसी रूप में ग्रहण नहीं कर पाता है। और दूसरी ओर वाग् यंत्र की भिन्नता होने से भी भाषा में भिन्नता आ जाती है।

ध्वनियों का अपना परिवेश होता है- अनेक बार वाक्य में निरर्थक ध्वनियाँ जुड़ जाती हैं और उससे अर्थ की प्राप्ति होने लगती है और वह धीरे-धीरे भाषा का आकार ग्रहण कर लेती है।

ध्वनि परिवर्तन का एक कारण प्रयत्न लाघव भी है- मनुष्य अपनी इच्छा से बोलने की सुविधा के अनुसार ध्वनियों में परिवर्तन कर देता है और शब्दों को लघु बना देता है जैसे Knife, Talk आदि। इसी कारण ध्वनि में भी परिवर्तन हो जाता है।

मनुष्य की प्रवृत्ति शीघ्र भाषण की होती है- यह शीघ्र भाषण भी ध्वनि परिवर्तन का एक कारण है। जिस शब्द में एक समान अक्षर का एक साथ उच्चारण हो रहा हो वहां उसमें से एक अक्षर का लोप कर देने की प्रवृत्ति पैदा हो जाती है। जैसे-संवाददाता- संवादाता, खरीददार- खरीदार। इससे भी ध्वनि परिवर्तन आ जाता है।

भ्रामक व्युत्पत्तियाँ भी ध्वनि परिवर्तन का कारण है- भ्रामक व्युत्पत्ति से तात्पर्य है किसी शब्द के अर्थ का वह आधार मान लेना जो वास्तव में उसका आधार नहीं है। जैसे Library के स्थान पर रायबरेली।

ध्वनि परिवर्तन का एक कारण बलाघात है- शब्द या वाक्य के किसी विशेष अंश पर बल देना बलाघात कहलाता है। जिसके कारण ध्वनि परिवर्तित हो जाती है जैसे आकाश के स्थान पर अकाश और आलोचना के स्थान पर अलोचना। इससे ध्वनि परिवर्तित हो गई है।

शब्दों की असाधारण लम्बाई- यह भी ध्वनि परिवर्तन का कारण है- लंबे शब्दों को बोलने में असुविधा होने के कारण उसे छोटा करके बोलने की प्रवृत्ति मनुष्य में देखी जाती है, जिससे ध्वनि परिवर्तित हो जाती है, जैसे एक्जक्यूटिव को एक्जकेटिव, यूनिवर्सिटी को यूनिवसटी।

अज्ञान- से भी ध्वनि परिवर्तन हो जाता है जैसे कंपाउंडर को कंपोडर।

भावुकता के कारण भी ध्वनि में परिवर्तन देखा गया है- मनुष्य अपने पति-पत्नी, मित्र, भाई-बहन, गुरु,शिष्य, संतान आदि के प्रति व्यवहार में भावुकता की परिधि को लांघ जाता है और संबंधों के उच्चारण में बदलाव आ जाता है जैसे भाभी जी को भौजी। बहन को बहना।

कुछ स्थानों पर **सादृश्य के कारण** भी ध्वनि परिवर्तन देखा गया है। जैसे एकदश के स्थान पर एकादश आदि।

इस प्रकार ध्वनि परिवर्तन के कारण कहीं आगम, कहीं लोप, कहीं विपर्यय, कहीं अपश्रुति आदि देखी गई है । विभिन्न भाषाओं के संदर्भ में इन सब का अध्ययन करना ही ध्वनि विज्ञान के अंतर्गत आता है । इस प्रकार ध्वनि विज्ञान के अंतर्गत जहां एक ओर विश्व की सभी भाषाओं की ध्वनियों(ध्वनि शिक्षा) पर विचार किया जाता है, वहीं दूसरी ओर ध्वनि विकार भी भाषा विज्ञान के अध्ययन के विषय हैं ।